Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AP–456

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI

Paper - IV **(ग)**

(तुलसीदास)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा **50** शब्द)

(i) सुनहु ..... भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥

यहाँ रिक्त स्थान पर कौनसा शब्द आएगा ? मुनिनाथ (वशिष्ठ) किसे संबोधित कर रहे हैं ?

(ii) ''एक कृपालु तहां 'तुलसी' दसरथ को नंदन बंदि-बटैया॥'' पंक्ति से क्या तात्पर्य है ?

(iii) 'भक्तों का कण्ठहार' किसे कहा गया है ?

(iv) ''जाके प्रिय न राम-बैदेही।

सो त्यागिये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥''

यह पद तुलसीदासजी ने किसको लिखकर भेजा था ?

(v) 'नवधा भक्ति' में वर्णित भक्ति के नौ प्रकार कौन-कौनसे हैं ?

(vi) 'मन पछितैहै अवसर बीते।' पद में कवि किस अवसर की ओर संकेत कर रहा है ?

(vii) गीतावली में चारों भाइयों के पैरों चलने की कामना करते हुए कौनसी माता कहती है—''पगनि कब चलिहौ चारौ भैया ?''

(viii) ''राम-पितु गोद-महामोद भरे दसरथ'' पद के अनुसार कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी ने किन-किन पुत्रों को अपनी गोद में ले रखा है ?

(ix) तुलसीदासजी की **चार** रचनाओं के नाम लिखिए।

(x) तुलसीदासजी के काव्य में अध्यात्म-दर्शन का क्या स्वरूप है ?

खण्ड–ब प्रत्येक 8

सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा **200** शब्द)

निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न दोहा॥

जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥

सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥

तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥

जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥

जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥

3. कबहुंक अंब! अवसर पाइ।

मेरियौ सुधि द्याइवी कछु करुन-कथा चलाइ॥

दीन, सब अंगहीन, खीन, मलीन, अघी अघाइ।

नाम लै भरै उदर एक प्रभु दासि दास कहाइ॥

बूझिहैं 'सो है कौन' ? कहिबी नाम-दसा जनाइ।

सुनत राम कृपालु-के मेरि बिगरियौ बनि जाइ॥

जानकी! जग-जननी! जन-की किए बचन-सहाइ।

तरै 'तुलसीदास' भव, तव नाथ गुन-गुन गाइ॥

4. मन पछितैहै अवसर बीते।

दुरलभ देह पाइ हरि-पद भजु, करम, बचन अरु बचन अरु ही ते॥

सहसबाहु, दसबदन आदि नृप, बचे न काल बली तें।

हम-हम करि धन-धाम संवारे, अंत चले उठि रीते॥

सुत-बनितादि जानि स्वारथ-रत, न करू नेह सबही तें।

अंतहु तोहि तजैंगे पामर! तू न तजै अबही तें॥

अब नाथहिं अनुरागु, जागु जड़! त्याग दुरासा जी तें।

बुझै न काम-अगिनि 'तुलसी' कहुं, विषय-भोग बहु घी तें॥

5. किसमी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भांट, चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।

पेट-को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि, अटत गहन-बन आहन अखेट-की।

ऊंचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही-को पचत बेंचत बेटा-बेटकी।

'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम-ही तें, आगि बड़वागि-तें बड़ी है आगि पेट-की।

खेती न किसान को, भिखारी-को न भीख, बलि, बनिक को बनिज न चाकर-को चाकरी।

जीविका-विहीन लोग सीधमान सोच-बस, कहैं एक एकन सों कहां जाइं, का करीं ?

6. सांची कहौं कलिकाल कराल! मैं ढारो-बिगारो तिहारो कहा है।

काम-को, कोह-को, लोभ-को, मोह-को, मोहि-सों आनि प्रपंच रहा है॥

हौ जगनायक लायक आज, पै मेरियौ टेव कुटेव महा है।

जानकि-नाथ-बिना, तुलसी, जग दूसरे-सों करिहौं न हहा है॥

7. सुभग सेज सोभित कौसल्या, रुचिर राम-सिसु गोद लिये।

बार-बार बिधु-बदन बिलोकति, लोचन चारु चकोर किये॥

कबहुं पौढ़ि पय-पान करावति, कबहुं राखति लाइ हिये।

बाल-केलि गावति, हलरावति, पुलकित प्रेम-पियूष पिये॥

बिधि महेस मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।

'तुलसिदास' अस सुख रघुपति-पै, काहू तो पायो न बिये॥

8. कहौ, बिपिन धौं केतिक दूरि ?

जहं किय गवन कुंवर कोसलपति, बूझति सिय, पिय पतिहि बिसूरि॥

प्राननाथ! परदेस पयादेहि, चले सकल सुख तजि, तृन तूरि।

करौं बयारि बिलंबि बिटपतर, झारों चरन-सरोरुह-धूरि॥

'तुलसिदास' प्रभु प्रिया बचन सुनि, नीरजन्नयन नीर रहे पूरि।

कानन कहां अबहिं, सुनु, सुंदरि! रघुपति फिरि चितए हित भूरि॥

खण्ड–स प्रत्येक 20

निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. 'रामचरितमानस' भारतीय संस्कृति का गौरव-ग्रंथ है। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

10. 'विनय-पत्रिका' भक्तों का कण्ठहार है। इस कथन के आधार पर तुलसीदासजी की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

11. 'गीतावली' की विशेषताएँ बताइए।

12. तुलसीदासजी की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए उनके लोकनायक रूप को उजागर कीजिए।